RGMVP

Working for Poverty Reduction and Women's Empowerment

राजीव गाँधी महिला विकास परियोजना

राजीव गाँधी चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित स्वयं सहायता समूह आधारित एक विशेष परियोजना

(सहयोग–नाबार्ड,सरप एंव सहभागी बैंक)

सूक्ष्म ऋण योजना

Micro Credit Plan (MCP)

कुल वित्तीय समाावेश रणनीति के अर्न्तगत परिपक्व समूहों का

सूक्ष्म ऋण योजना आधारित जुड़ाव

प्रशिक्षण सामग्री

कुल वित्तीय समावेश

पृष्ठभूमि

भारत की 65% आबादी अभी भी गांव में रहती है। 48% परिवार की पहुंच अभी भी बैंकों की सेवाओं तक नहीं है और इसमें से ज्यादा तर लोग गांव में रहते हैं। 26% आबादी अभी भी गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रही है। मात्र 21% गांव के परिवारों की पहुंच बैंक की सेवाओं (बैंक ऋण) तक है और बैंकिंग व्यवस्था द्वारा मात्र 20% गरीब ग्रामीण परिवारों की आवश्यकता (ऋण) की पूर्ति की गयी है। इस समस्या के समाधान के लिये भारत सरकार ने भारतीय रिर्जव बैंक को निर्देश जारी किये हैं कि कुल वित्तीय समावेश के अर्न्तगत स्वंय सहायता समूह के माध्यम से सभी सदस्यों को कुल वित्तीय जरूरतों के लिये ऋण उपलब्ध कराया जाये।

कुल वित्तीय समावेश

कुल वित्तीय समावेश एक ऐसा स्थान है जहां पर स्वंय सहायता समूह के माध्यम से सभी वित्तीय जरूरतों के लिये ऋण आसानी से प्राप्त हो जाता है। इसके लिये कोई भी दस्तावेज, कागज गिरवी नहीं रखना पड़ता। बैंक द्वारा 5 वर्ष के लिये यह ऋण आसान ब्याज दरों पर उपलब्ध कराया जाता है।

कुल वित्तीय समावेश के अन्तर्गत मुख्य रूप से तीन आवश्यकताओं के लिये ऋण उपलब्ध कराया जाता है जो कि निम्नलिखित हैं –

कुल वित्तीय समावेश

(स्वंय सहायता समूह के द्वारा)

आय संवर्धन गतिविधि (आजीविका)

1. पशुपालन
2. कृषि के लिये
3. कृषि संबधित गतिविधियां
4. ग्रामीण गैर कृषि गतिविधियां

सामाजिक जरूरत

1. स्वास्थ्य जरूरत
2. पढ़ाई के लिये
3. घर बनाने के लिये
4. उत्सव जैसे–शादी

कर्जा मुक्ति के लिये

1. साहूकार से ऋणमुक्ति के लिये
2. गिरवी खेत छुड़ाने के लिये के

सूक्ष्म ऋण योजना :—

कुल वित्तीय समावेश के अन्तर्गत परिपक्व समूह जुड़ाव के लिए पात्र होते हैं जैसे—वे समूह जिनका जुड़ाव सी.सी.एल. द्वारा पहले हो चुका है और सी.सी.एल. राशि से नियमित आन्तरिक लेन—देन व अच्छी वापसी कर रहे हैं, वे ही समूह सूक्ष्म ऋण योजना आधारित कुल वित्तीय समावेश के लिए पात्र होगें। कुल वित्तीय समावेश के लिये प्रत्येक समूहों को सूक्ष्म ऋण योजना बनाकर बैंक में जमा करना पड़ता है। सूक्ष्म ऋण योजना के माध्यम से गरीब परिवार गरीबी से बाहर आ सकते हैं। यह एक ऐसी व्यवस्थित योजना है जिसमें प्रत्येक सदस्य समूह में चर्चा करने के बाद अपने परिवार में भी चर्चा करके यह निश्चित करते हैं कि उन्हें किस कार्य के लिये कितने पैसों की आवश्यकता है और विभिन्न प्रकार के आजीविका के स्रोतों से ऋण की नियमित वापसी कैसे करेगें इस पर भी समूह में चर्चा करते हैं। सूक्ष्म ऋण योजना समूह के प्रत्येक सदस्य अपनी मासिक आमदनी बढ़ा सकते हैं। सूक्ष्म ऋण योजना का मुख्य उद्देश्य वर्तमान अजीविका बढ़ाते हुये दूसरे अजीविका को अपनाते हुये अपनी आय को बढ़ाना है। सूक्ष्म ऋण योजना का मुख्य उद्देश्य है :—

1. आय को बढ़ाना
2. व्यय को कम करना
3. आजीविका को बढ़ाना
4. जोखिम को कम करना

सूक्ष्म ऋण योजना के 7 कदम

1– समूह का सम्पूर्ण समाचार/जानकारी

2– समूह के सदस्यों का सम्पूर्ण विवरण

3– परिवार का आय एवं व्यय विवरण

4– पारिवारिक निवेश योजना

5– ऋण की प्रथम प्राथमिकता

6– ऋण की द्वितीय प्राथमिकता

7– करारनामा

अ– सदस्य एवं समूह के बीच

ब– समूह एवं बैंक के बीच

स– समूह एवं ग्राम संगठन के बीच

द्वितीय सी0सी0एल0 के लिये पात्र समूह :–

द्वितीय सी0सी0एल0 के लिये वे समूह पात्र होते हैं जिनका प्रथम सी0सी0एल हुये 6 माह हो गया है तथा उस समूह ने प्रथम सी0सी0एल0 का उपयोग अच्छे तरीके से किया हो, समूह का टर्न ओवर अच्छा रहा हो।

सबसे पहले द्वितीय सी0सी0एल0 के लिये ग्रेडिंग की जाती है। ग्रेडिंग में समूह को 100 में से 85 अंक मिलना अनिवार्य है। यदि समूह ग्रेडिंग में 85 अंकों के साथ पास हो जाता है तो वह समूह सूक्ष्म ऋण योजना बनाने का पात्र हो जाता है। इस योजना को तैयार करने के लिये तीन दिन लगते हैं।

सूक्ष्म ऋण योजना के लिये समूह को निम्नलिखित अच्छी प्रक्रियाओं को करना अनिवार्य है –

1. साप्ताहिक बैठक
2. साप्ताहिक बचत
3. आन्तरिक लेन–देन
4. नियमित ऋण वापसी किश्तों में
5. अभिलेखों का रख–रखाव
6. सूक्ष्म ऋण योजना
7. मानव विकास पहल

सूक्ष्म ऋण योजना को छोड़कर उपर्युक्त 7 में से 6 अभ्यासों का होना अनिवार्य है।

प्रारूप—ब

राजीव गाँधी महिला विकास परियोजना
स्वयं सहायता समूह की द्वितीय ग्रेडिंग का प्रारूप

समूह का नामः...ग्राम ....

विकास खण्ड..जिलाः...

			पूर्णांक	प्राप्तांक
1	**समूह की बैठक**			
	—	माह में 4 बैठक	: 10	
	—	माह में 2 बैठक या अधिक	: 08	
	—	माह में 1 बैठक	: 06	
2	**समूह की बचत**			
	—	महीने में 4 बार	: 10	
	—	महीने में 2 बार या अधिक	: 08	
	—	महीने में 1 बार	: 06	
3	**सदस्यों की बैठकों में सहभागिता**			
	—	90% या अधिक	: 10	
	—	75% से 90% तक	: 06	
	—	75% से कम	: 04	
4	**ऋण का उद्देश्य**			
		आय अर्जन/सामाजिक दायित्व (शादी, शिक्षा आदि) एवं ऋण चुकौतीः (गैर संस्थागत/महाजन से ऋण की चुकौती) हेतु		
	—	अधिकांश (50 प्रतिशत से अधिक) सदस्यों द्वारा लिया गया	: 10	
	—	40% से 50% तक सदस्यों द्वारा लिया गया	: 06	
	—	40% से कम सदस्यों द्वारा लिया गया	: 04	

5 **ऋण राशि का पुनर्चक(Recycling of funds) वसूली व वितरण**

–	आहरण सीमा के दो गुना से अधिक वितरण	:	10
–	आहरण सीमा के 1.5 गुना से 2 गुना तक वितरण	:	08
–	आहरण सीमा के 1.5 गुना से कम वितरण	:	06

6 **ऋण वापसी की प्रवृत्ति**

–	ऋण वापसी 90% से अधिक	:	10
–	ऋण वापसी 61% से 90% तक	:	06
–	ऋण वापसी 60% या कम	:	04

7 **क्या समूह द्वारा आर्थिक कियाकलाप का चयन कर आवश्यक कार्य योजना विकसित कर ली गयी है।**

–	स्पष्ट कार्ययोजना विकसित व स्पष्ट	:	10
–	विकसित किन्तु दूसरे के सुझावों पर निर्भर	:	06
–	नहीं	:	00

8 **समूह द्वारा अभिलेखों के रख–रखाव की स्थिति**

–	स्वयं समूह के द्वारा नियमित	:	10
–	नियमित किन्तु दूसरों की सहायता से	:	06
–	अनियमित	:	00

9 **क्या सदस्यों ने कौशल प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया है/सामान्य जानकारी है तथा समूह में कार्य करने व निर्णय लेने की क्षमता का विकास हो गया है**

–	सभी सदस्यों में	:	10
–	50% से अधिक सदस्यों में	:	06
–	50% से कम सदस्यों में	:	04

10 **<u>क्या समूह को आर्थिक क्रिया कलापों के प्रबन्धन एवं सिद्वान्तों से परिचय व सृजित होने वाली सम्पत्तियों के प्रति उत्तरदायित्व का बोध उत्पन्न हो चुका हैः</u>**

–	समूह के 61% या अधिक सदस्यों को	:	10
–	समूह के 50% से 60% तक सदस्यों को	:	08
–	50% से कम सदस्यों को	:	06
	योग		

- अधिकतम अंक : 100
- 85 से अधिक – अ– स्तर बहुत अच्छा है।
- 75 से 85 के मध्य – ब– स्तर अच्छा है।
- 75 से कम – स– स्तर सुधारने की आवश्यकता है।

नोट– यदि स्वयं सहायता समूह के प्रत्येक आंकलन बिन्दु में कम से कम 06 अंक एवं कुल प्राप्तांक 75 या इससे अधिक होगा तो समूह द्वितीय क्रेडिट लिंक हेतु योग्य है।

(एन0जी0ओ0)
अधिकृत प्राधिकारी

शाखा प्रबन्धक
बैंक...................

दिनाँकः............................

सूक्ष्म ऋण योजना का पहला कदम

1. समूह का सम्पूर्ण समाचार/जानकारी :– इस कदम में समूह का सम्पूर्ण विवरण लिया जाता है जो कि समूह की कार्यवाही रजिस्टर से आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। उदाहरण के लिये –

राजीव गाँधी महिला विकास परियोजना

स्वयं सहायता समूह पहल

आर0जी0सी0टी0 एवं नाबार्ड के सहयोग से चलाई जा रही एक विशेष परियोजना

कुल वित्तीय समावेश की पारिवारिक निवेश योजना

प्रथम चरण

समूह की सम्पूर्ण जानकारी

01– समूह का नाम : वैभव लक्ष्मी स्वयं सहायता समूह

02– ग्राम का नाम : जगतपुर

03– ब्लाक का नाम : जगतपुर

04– समूह के सदस्यों की संख्या : 12

अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति	पिछड़ी जाति	सामान्य जाति	अल्प संख्यक	कुल
		05	07		12

05– बैंक का नाम व समूह का बचत खाता नं0–बैंक ऑफ बड़ौदा, जगतपुर, खाता संख्या–18289

06– सी0सी0एल0 खाता नं0–5016067 प्रथम सी0सी0एल0 की तिथि–20.08.07
सी0सी0एल0 लिमिट–रूपये 30,000 / –

07– समूह गठन की तिथि : 15.06.2006

08– समूह की कुल बचत(कारपस) : रूपये 7743 / –

09– अ– अब तक कुल की गयी बैठकों की संख्या : 60

ब– उपस्थिति प्रतिशत : 95

10– क्या समूह की ग्राम संगठन में सदस्यता है : हाँ

11– क्या समूह ने किसी संस्था से ऋण प्राप्त किया है यदि हां तो कितना और कहां से : नहीं

12– बकाया ऋण की देय राशि :

सदस्यों से समूह को (आन्तरिक लेन–देन की राशि) : रूपये 4700 / –

समूह से बैंक को (सी0सी0एल0की राशि) : रूपये 4700 / –

13– ऋण कुल कितनी बार उपलब्ध कराया गया (दिया गया)

समूह द्वारा : 10 बार

बैंक द्वारा : 16 बार

14– कुल उपलब्ध करायी गयी ऋण राशि

समूह द्वारा : रूपये 13500 / –

सी0सी0एल0 द्वारा : रूपये 41000 /

15– पदाधिकारियों के नाम

अध्यक्ष : मालती

सचिव : मधुबाला

कोषाध्यक्ष : निर्मला

16— पदाधिकारियों के नाम एवं हस्ताक्षर

पदाधिकारी	नाम	हस्ताक्षर
अध्यक्ष	मालती	
सचिव	मधुबाला	
कोषाध्यक्ष	निर्मला	

ध्यान देने योग्य बातें :—

8. **समूह की कुल बचत (कारपस) :—** के स्थान पर समूह की कुल बचत + समूह का ब्याज + दण्ड + बैंक का ब्याज आयेगा। कार्यवाही रजिस्टर में महायोग के स्थान पर जो धनराशि लिखी जाती है वही धनराशि समूह की कारपस होती है।

9. **अ— अब तक कुल की गयी बैठकों की संख्या :—** के स्थान पर समूह ने अब तक जितनी बैठकें की हैं उसकी संख्या कार्यवाही रजिस्टर से गिनकर लिखनी है।

   ब— उपस्थिति प्रतिशत :— मान लीजिये एक समूह में 10 सदस्य हैं और समूह ने अब तक 50 बैठकें की हैं। प्रत्येक बैठक में कार्यवाही रजिस्टर में गिनने पर अंगूंठे अैर हस्ताक्षरों की संख्या 480 आती है और 50 बैठकों के अनुसार उपस्थिति प्रतिशत 50X10 = 500 कुल 500 सदस्यों को उपस्थित होना चाहिये पर 50 बैठकों में 480 सदस्य की उपस्थित हुये तो उपस्थित प्रतिशत इस प्रकार निकाला जायेगा।

$$\text{उपस्थिति प्रतिशत} = \frac{\text{उपस्थित हुये सदस्यो की संख्या}}{\text{कुल सदस्यों की संख्या जिन्हें उपस्थित होना चाहिये}} \times 100$$

$$= \frac{480}{500} \times 100$$

$$= 96\ \%$$

उपस्थिति प्रतिशत = 96 %

11. क्**या समूह ने किसी संस्था से ऋण प्राप्त किया है यदि हां तो कितना और कहां से** – इसके स्थान पर बैंक का नाम लिखा जायेगा जिस बैंक से प्रथम सी0सी0एल0 मिला है और स्वीकृत धनाराशि लिखी जायेगी।

12. **बकाया ऋण की देय राशि**

सदस्यों से समूह को आन्तरिक लेन–देन की राशि – इसके स्थान पर समूह के बचत खाता से उधार पर जो धनराशि है जो लिखी जायेगी। कार्यवाही रजिस्टर में उधार पर राशि वाले कालम में जो धनराशि है वा उस स्थान पर लिखी जायेगी।

समूह से बैंक को सी0सी0एल0 की राशि – इसके स्थान पर सी0सी0एल0 खाते में जो उधार पर राशि है वो लिखी जायेगी।

13. **ऋण कुल कितनी बार उपलब्ध कराया गया या दिया गया–**

समूह द्वारा :– इसके स्थान पर समूह द्वारा जितने बार ऋण उपलब्ध कराया गया है वह संख्या आयेगी। समूह के पास बुक से जितनी बार पैसा निकाला गया है उसे गिनकर वह संख्या इस स्थान पर लिखना है।

बैंक द्वारा :– सी0सी0एल0 पास बुक से जितनी बार पैसा निकाला गया है उसे गिनकर उसकी संख्या उस स्थान पर लिखनी है।

14. **कुल उपलब्ध करायी गयी ऋण राशि :–**

समूह द्वारा :– इसके स्थान पर समूह का जितना टर्न ओवर हो चुका है वह धनराशि लिखनी है।

सी0सी0एल0 द्वारा :– इसके स्थान पर सी0सी0एल0 धनराशि का जितना टर्नओवर हो चुका है वह धनाराशि लिखनी है।

चरण–2

समूह के सदस्यों का सम्पूर्ण विवरण

समूह के सदस्यों का सम्पूर्ण विवरण में सदस्यों से सम्बन्धी सम्पूर्ण जानकारी जैसे

- सदस्य का नाम, आयु, जाति,
- शिक्षा,
- व्यवसाय,
- परिवार के सदस्यों की कुल संख्या और विवरण लिया जाता है जैसे महिला और पुरूषों और परिवार में बच्चों की संख्या ली जाती है
- सदस्य के पास भूमि, सदस्य के घर का प्रकार पक्का या कच्चा,
- सदस्य के घर में पशुओं की संख्या
- और उसकी आर्थिक स्थिति – अति गरीब, गरीब, मध्यम व अमीर को समूह के सदस्यों से चर्चा करके लिखते हैं।

समूह के सदस्यों का सम्पूर्ण विवरण, समूह की कार्यवाही रजिस्टर में समूह सदस्य विवरण की मदद से भरते हैं। इस कदम को करते समय इस बात का ध्यान देना चाहिये कि कार्यवाही रजिस्टर के ‘‘समूह सदस्य विवरण‘‘ में लिखी गयी जानकारी समूह गठन के समय लिखी जाती जो कि पुरानी होती है। उदाहरण के लिये यदि समूह का गठन दो वर्ष पहले हुआ हो तो बुक वन के समूह सदस्य विवरण में सदस्यों की आयु दो वर्ष पहले की होगी, सदस्यों की वर्तमान आयु निकलने के लिये उसमें दो वर्ष जोड़ देते हैं।

चरण–2
समूह के सदस्यों का सम्पूर्ण विवरण

क्रमांक	सदस्य का नाम	आयु	जति	शिक्षा	व्यवसाय	पारिवारिक विवरण				भूमि			घर का प्रकार		पशुपालन						आर्थिक स्थिति			
						बच्चे			वयस्क	कुल भूमि	संचित	बंजर	पक्का	कच्चा	बैल	गाय	भैंस	भेड़	बकरी	अन्य	अति गरीब	गरीब	मध्यम	अमीर
						बालिका	बालक	स्त्री	पुरूष															
1	मालती	36	सामान्य	10	मजदूरी	2	1	1	1	1 बीघा							1							
2	सरस्वती	39	सामान्य	8	नौकरी	1		1	1															
3	मधुबाला	52	सामान्य	5	मजदूरी	1	1	1	1															
4	बेटी देवी	32	सामान्य	5	कृषि	3	2	1	1	2 बीघा														
5	सुमन सोनी	36	पिछड़ी जाति	5	व्यापार	1	3	1	1															
6	निर्मला	47	पिछड़ी जाति		मजदूरी	2	4	1	1							1				1				
7	ज्ञानवती	50	पिछड़ी जाति		मजदूरी		2	3	1															
8	लक्ष्मी देवी	54	सामान्य	10	कृषि	1	1	1	1	2 बीघा						1								
9	शान्ती देवी	52	सामान्य		कृषि	1	3	2	1	5 बीघा					2					1				
10	सुशीला	26	पिछड़ी जाति	8	चालक	1	2	1	1															
11	उमा सिंह	40	सामान्य	5	नौकरी	1	1	1	1	6 बीघा														
12	राज कुमारी	32	पिछड़ी जाति	8	चालक	2	2	2	1															

चरण–3

सदस्य की वार्षिक आय–व्यय का ब्यौरा

इस कदम में हम समूह के हर सदस्य का जो कि सूक्ष्म ऋण योजना के माध्यम से ऋण प्राप्त कर रहा है उसका वार्षिक आय और व्यय निकालते हैं। सबसे अच्छा तरीका यही है कि पहले सदस्यों का व्यय विवरण निकाला जाय। यह कार्य बहुत आसान नहीं होता है क्योंकि उनका आय–व्यय विवरण पूरे वर्ष का ज्ञात करना होता है और सदस्य के लिये बताना आसान नहीं होता है। उस कार्य को अच्छी तरह से करने के लिए हम सदस्य से खर्चो को प्रतिदिन के हिसाब से पूँछ लेते हैं और फिर उसे पूरे माह एवं वर्ष के लिए निकाल लेते हैं जैसे–यदि हम किसी सदस्य से यह पूँछते हैं कि आपके घर में साल भर में कितना गेहूं और चावल खर्च होता है तो उस महिला के लिए बताना मुश्किल होगा। उसको आसानी से ज्ञात करने के लिए हम उससे यह पूंछ सकते हैं कि प्रतिदिन कितना दाल, चावल, आटा आप इस्तेमाल करती हैं। प्रतिदिन के हिसाब से वह आसानी से बता देगी जिसको हम महीने एवं साल भर के लिये निकाल लेते हैं।

कुछ खर्च जैसे–बिजली का बिल, फोन का बिल, बच्चों की पढ़ाई पर खर्च को मासिक ज्ञात कर सकते हैं। कुछ खर्च जैसे– कृषि पर को छमाही या साल भर के लिये ज्ञात कर सकते हैं।

- व्यय की तरह क्रमांक–4 पर अन्य वस्तुओं पर खर्च में हम खाने का तेल, चाय, चीनी, मसाले इत्यादि के बारे में पता करते हैं। इसी तरह क्रमांक 12 पर अन्य खर्च में हम, फोन का, लकड़ी, गैस, मिट्टी का तेल इत्यादि का खर्च ज्ञात करते हैं।

- व्यय निकालते समय यह बात ध्यान देने योग्य है कि हो सकता है सदस्य सरकारी राशन की दुकान से राशन एवं मिट्टी का तेल तथा चीनी ले रहा हो, जहां पर बाजार से कम कीमत पर सामान मिलता है। ऐसी स्थिति में जितनी वस्तु सदस्य वहां से ले रहा है उसको उसी कीमत पर तथा जितना बाजार से ले रहा है उसको बाजार दर से जोड़ते हैं। जैसे–किसी सदस्य के परिवार में 40 किग्रा गेंहू लगता है। इसमें से 25 किग्रा/माह उसे 5 रू0/किग्रा की दर से सरकारी गल्ले की दुकान से मिल रहा है एवं शेष 15 किग्रा/माह 12 रू0/किग्रा की दर से वह बाजार से ले रहा है ऐसी स्थिति में उसका गेहूं का कुल खर्च होगा–

  25 X 5 = रू0 125 = 00

  15 X 12 = रू0 180 = 00

  योग =रू0 305 =00

- समूह में ज्यादातर सदस्य एक से ज्यादा किस्म की दालें प्रयोग करते हैं जैसे–मटर की दाल, उरद की दाल, अरहर की दाल। ऐसी स्थिति में हर दाल की मात्र अलग–अलग ज्ञात कर लेते हैं और उनका अलग–अलग कीमत निकाल कर योग कर देते हैं तो दाल का खर्च निकल जाता है। जब हम सम्पूर्ण व्यय को ज्ञात कर लेते हैं तो उसका योग करके कुल व्यय (वार्षिक) निकाल लेते हैं।

- व्यय का विवरण निकालने के बाद आय का विवरण निकालते हैं। व्यय की तरह क्रमांक 1 में कृषि से प्राप्त कुल आय का फसलवार निकालते हैं। जैसे–गेहूं एवं उसके साथ की फसल का एक साथ तथा धान एवं उसके साथ की अन्य फसलों को एक साथ निकालकर जोड़ देते हैं तो कृषि से प्राप्त कुल आय प्राप्त हो जाती है। क्रमांक–2 पर पति की मजदूरी से प्राप्त आय में पति की आमदनी लिखते हैं जो पति अपने खेत के अलावा मजदूरी करके प्राप्त करता है। क्रमांक–3 में पत्नी की मजदूरी से प्राप्त आय जो दूसरे के खेती में काम करके या अन्य तरह की मजदूरी से प्राप्त करता है।

- क्रमांक–3 में पुत्र या पुत्री की मजदूरी से प्राप्त आय को लिखते हैं इसमें सिर्फ उसी पुत्र या पुत्री की आमदनी लिखते हैं जो सदस्य के साथ रहते हैं।

- क्रमांक–5 में अन्य खर्च में हम पशुपालन जैसे–गाय, भैंस, बकरी इत्यादि से प्राप्त आय को लिखते हैं।

- अन्य खर्च में ही व्यवसाय में वह आमदनी लिखते हैं जो किसी व्यवसाय जैसे–किराने की दुकान, कपड़े की दुकान, या सब्जी तथा फल बेचनें व खरीदने से प्राप्त होती है। नौकरी में पति–पत्नी या पुत्र/पुत्री की वह आमदनी लिखते हैं जो नौकरी से प्राप्त होता है। यह आमदनी मासिक होती है और लगातार होती रहती है।

- यदि सदस्य या उसका पति या बच्चे को हस्तशिल्पी जैसे–दरी, कालीन, मिट्टी के बर्तन, बाँस के बर्तन इत्यादि का कार्य करते है तो उससे प्राप्त आय को हस्तशिल्पी से प्राप्त आय में लिखते हैं।

- अन्त में समस्त श्रोतों से प्राप्त आय को जोड़ लेते हैं जिससे हमें कुल आय का पता चल जाता है।

<u>ध्यान देने योग्य बात–</u>

1– यदि सदस्य अपनी खेती से प्राप्त अनाज को इस्तेमाल में लाता है तो उसको भी व्यय में लिया जायेगा और उसी तरह खेती से जो भी पैदा होता है चाहे उसको वह स्वयं इस्तेमाल कर रहा हो फिर भी उसको आय में लेते हैं।

2– कई सदस्य ऐसे होते हैं जिनके पति या बच्चे बाहर नौकरी या मजदूरी करते हैं तो उनकी वही आमदनी लिखते हैं जितना वे घर पर भेजते हैं। हम उनकी पूरी आमदनी इसलिये नहीं लिखते क्योंकि घर के खर्च में उसका खर्च नहीं लेते हैं।

चरण–3

सदस्य की वार्षिक आय व्यय का ब्यौरा

1–सदस्य का नाम : मालती	4– जाति : सामान्य
2– पति का नाम : श्री रमेश कुमार तिवारी	5– उम्र : 36
3– भूमि का विवरण : 1 बीघा	6– पारिवारिक सदस्यों का विवरण : 5
आय	व्यय
1– कृषि से प्राप्त कुल आय : रूपये 6000/– वार्षिक	1– चावल प्रति माह : रूपये 300/– प्रति माह
2– पति की मजदूरी से प्राप्त कुल आय : रूपये 1500/– मासिक	2– गेहूं प्रति माह : रूपये 270/– प्रतिमाह
3– पत्नी मजदूरी से प्राप्त कुल आय	3– दाल प्रति माह : रूपय 84/– प्रतिमाह
4– पुत्र या पुत्री की मजदूरी से आय	4– अन्य वस्तुओं पर खर्च : रूपये 300/–प्रतिमाह
5– अन्य : रूपये 400/– वार्षिक	5– बिजली :
अ– व्यवसाय	6– साबुन/सर्फ : रूपये 150/– प्रतिमाह
ब– नौकरी	7– सब्जियों पर खर्च : रूपये 200/– प्रतिमाह
स– हस्तशिल्पी	8– मीट :
6– कुल आय (1 2 3 4 5): रूपये 24400/– वार्षिक	9– बच्चों की पढ़ाई : रूपये 1000/–प्रतिमाह
	10–स्वास्थ्य : रूपये 150/– प्रतिमाह
	11–यात्रा : रूपये 100/– प्रतिमाह
	12–अन्य खर्च : रूपये 140/–
	13–कृषि कार्यो पर खर्च : रूपये 3000/– वार्षिक
	14–कपड़ों और त्योहार पर खर्च : रूपये 1800/– वार्षिक
	15–पशुओं पर खर्च : रूपये 300/– प्रतिमाह
	16– कुल व्यय : रूपये 29, 728/– वार्षिक

<u>चरण – 4</u>

<u>पारिवारिक निवेश योजना</u>

इस कदम के अंतर्गत समूह का प्रत्येक सदस्य अपनी आमदनी और खर्चे को देखते हुये यह निश्चित करता है कि उसे किस काम के लिये कितने पैसों की आवश्यकता है। और वह कितनी किश्तों में वापस करेगा। इस योजना के अंतर्गत कुल तीन वित्तीय जरूरतों के लिये बैंक द्वारा पैसा उपलब्ध कराया जाता है।

1. आय संवर्धन गतिविधि
2. सामाजिक जरूरत
3. कर्जा मुक्ति

बैंक यह धनराशि समूह को 5 साल (60 किश्तों) के लिये देती है। समूह अपने सदस्यों को यह धनराशि 2 वर्ष (24 किश्तों) के लिये देता है।

बैंक
↓
5 वर्ष (60 किश्तें)
↓
समूह
↓
2 वर्ष (24 किश्तें)
↓
सदस्य

यदि समूह अच्छी प्रक्रिया कर रहा होता है और ग्रेडिंग में 85 अंकों के साथ पास होता है तो बैंक आफ बड़ौदा और ग्रामीण बैंक 9 प्रतिशत ब्याज दर पर ऋण उपलब्ध कराते हैं। चूंकि ऋण की राशि अधिक होने के कारण समूह के सदस्य आपस में चर्चा करने के बाद ब्याज दर निर्धारित करते हैं।

<u>ध्यान देने योग्य बातें</u>

1. समूह को यह कदम चार्ट के माध्यम द्वारा समझाया जाता है चार्ट पेपर पर कुछ सूचनाएं ली जाती हैं उदाहरण के लिये –

समूह का नाम							
क्रम संख्या	सदस्य का नाम	गतिविधि	कुल धनराशि	मूलधन	ब्याज	किश्तें	पैसा कैसे वापस आयेगा
कुल योग							

2. आवश्यक सूत्र –

$$\text{मूलधन} = \frac{\text{कुल धनराशि}}{\text{कुल किश्त}}$$

उदाहरण यदि कोई बहन 20,000/– भैंस पालन के लिये लेती है तो समूह का ब्याज 2% तय हुआ है तो –

$$\text{मूलधन} = \frac{20,000}{24} = 833.33$$

= 850/- (मूलधन 833.33 आ रहा है लेकिन यदि यह राशि किसी सदस्य को बताते हैं तो उसे ध्यान नहीं रहेगा इसलिये संख्या को पूर्णांक करना आवश्यक है इसलिये इसे 850/– लिखा गया है)

$$\text{ब्याज} \quad \frac{20,000}{100} \times 2 = 400$$

किश्त = मूलधन + ब्याज

= 850 + 400 = 1250

चूंकि समूह दो साल के लिये सदस्यों को पैसा दे रहा है इसलिये किश्त 12X2 = 24 होगी।

3. एक सदस्य तीनों आवश्यकताओं के लिये पैसा ले सकता है।

4. यह ध्यान देने योग्य बात है कि प्रत्येक सदस्य को 50,000/– से अधिक धनराशि नहीं दी जा सकती है। तथा आय बढ़ाने के लिये एक ही गतिविधि के लिये पैसा दिया जायेगा।

इस प्रकार इस पूरी जानकारी को फारमेट में उतार लेते हैं उदाहरण के लिये –

चरण–4
पारिवारिक निवेश योजना

क्रमांक	सदस्य का नाम	कुल वित्तीय जरूरतों को पूर्ण करने के लिए ऋण की आवश्यकता						सदस्य का योगदान(रू0)	समूह के माध्यम से बैंक धनराशि की आवश्यकता	सदस्य से समूह को ऋण की देय धनराशि(रू0)			टिप्पणी
		आय संवर्धन गतिविधि		सामाजिक आवश्यकता		पुराने कर्ज की चुकौती	कुल धनराशि की आवश्यकताए			कुल किश्तों की राशि			
		गतिविधि	राशि (रू0)	गतिविधि	राशि (रू0)	राशि (रू0)				मूलधन(रू0)	ब्याज(रू0)	कुल (रू0)	
1	मालती	भैंस पालन	25000				25000		25000	1100	500	1600	
2	सरस्वती	बकरी पालन	35000				35000	5000	30000	1250	600	1850	
3	मधुबाला	टैक्सी	80000				80000		80000	3400	1600	5000	
4	बेटी देवी	भैंस पालन	15000				15000		15000	700	300	1000	
5	सुमन सोनी	आभूषण	50000				50000	10000	40000	1700	800	2500	
6	निर्मला			विवाह	20000		20000		20000	800	400	1200	
7	ज्ञानवती					60000	60000		60000	1200	1200	2400	
8	लक्ष्मी देवी	भैंस पालन	20000				20000		20000	800	400	1000	
9	शान्ती देवी	भैंस पालन	15000				15000		15000	700	300	1200	
10	सुशीला	मोटर मरम्मत	5000			35000	40000		40000	1700	800	2500	
11	उमा सिंह	भैंस पालन	20000	मकान मरम्मत	30000		50000		50000	2100	1000	3100	
12	राज कुमारी	टैक्सी	50000				50000	10000	40000	1700	800	2500	
	योग		**315000**		**50000**	**95000**	**460000**	**25000**	**435000**	**17150**	**8700**	**25850**	

चरण – 5

प्रथम प्राथमिकता में ऋण प्राप्त करने वाले सदस्यों का विवरण

पारिवारिक निवेश योजना चरण – 4 में समूह के सदस्यों की जरूरत (आय संवर्धन गतिविधि, सामाजिक आवश्यकताएं या पुराने कर्जे की चुकौती) को पूरा करने के लिये आवश्यक राशि को सदस्यों से चर्चा करके निकालते हैं तथा ऋण ली जा रही राशि सदस्य कैसे वापस करेंगें इसका माध्यम भी तय करते हैं। बैंक समूह के सभी सदस्यों को एक साथ ऋण नहीं देता है। बैंक, पारिवारिक निवेश योजना, में निकल कर आयी हुयी कुल राशि का 70 प्रतिशत ही भुगतान करता है। उदाहरण के लिये यदि समूह की कुल जरूरत 4,35,000 निकल कर आती है तो इसका 70 प्रतिशत लगभग 3,04,500 रूपये होता है। लेकिन पहली बार में इस राशि से सभी सदस्यों को ऋण नहीं दिया जा सकता है इसलिये समूह सभी सदस्यों के साथ चर्चा करके और आम सहमति बनाने के बाद, प्राथमिकता एवं आवश्यकता के अनुसार आधे से अधिक सदस्यों को ऋण दिया जाता है।

जब प्रथम प्राथमिकता के सदस्य ऋण की किश्तों की वापसी करते हैं तब दूसरी प्राथमिकता के सदस्यों को चक्रीय प्रणाली बनाकर ऋण दिया जाता है। इसको नीचे उदाहरण के रूप में समझाया गया है।

चरण–5

प्रथम प्राथमिकता में ऋण प्राप्त करने वाले सदस्यों का विवरण

कमांक	सदस्य का नाम	कुल वित्तीय जरूरतों को पूर्ण करने के लिए ऋण की आवश्यकता						सदस्य का योगदान (रू0)	समूह के माध्यम से बैंक धनराशि की आवश्यकता	सदस्य से समूह को ऋण की देय धनराशि(रू0)			समूह से बैंक को ऋण की देय धनराशि			टिप्पणी
		आय संवर्धन गतिविधि		सामाजिक आवश्यकताएं		पुराने कर्ज की चुकौती	कुल धनराशि की आवश्यकताए			किश्तों की राशि(24 किश्तों में)			किश्तों की कुल संख्या(25 से 60 तक)			
		गतिविधि	राशि (रू0)	गतिविधि	राशि (रू0)	राशि (रू0)				मूलधन (रू0)	ब्याज (रू0)	कुल (रू0)	मूलधन (रू0)	ब्याज (रू0)	कुल (रू0)	
1	ज्ञानवती					60000	60000		60000	1200	1200	2400				50 किस्त
2	मधुबाला	टैक्सी	80000				80000		80000	3400	1600	5000				24 किस्त
3	शान्तीदेवी	भैंस पालन	15000				15000		15000	700	300	1000				24 किस्त
4	सुशीला	गाडी मरम्मत	5000			35000	40000		40000	1700	800	2500				24 किस्त
5	राज कुमारी	टैक्सी	50000				50000	10000	40000	1700	800	2500				24 किस्त
6	मालती	भैंस पालन	25000				25000		25000	1100	500	1600				24 किस्त
7	बेटी देवी	भैंस पालन	15000				15000		15000	700	300	1000				24 किस्त
	योग		**190000**			**95000**	**285000**	**10000**	**275000**	**10500**	**5500**	**16000**	**4600**	**2060**	**6660**	**60 किस्त**

चक्रीय प्रणाली

चक्रीय प्रणाली के माध्यम से दूसरी प्राथमिकता के सदस्यों को किस माह में पैसा मिल जायेगा उसे ज्ञात करते हैं। इसके अन्तर्गत सर्वप्रथम प्रथम वरीयता के सदस्यों द्वारा समूह को प्राप्त (मासिक) कुल राशि को जोड़ लेते हैं।

उदाहरण– प्रथम प्राथमिकता में ऋण पाने वाले सदस्यों से किस्त की वापसी (6 जनी)

मूलधन = 10500

ब्याज = 5500

योग– 16000

सदस्यों द्वारा समूह को प्राप्त राशि में समूह द्वारा बैंक को देय राशि को निकाल लेते हैं।

उदाहरण– मान लेते हैं कि बैंक ने समूह को रू0 2,7,5000 ऋण के रूप में 9% वार्षिक ब्याज पर 5 वर्ष (60 किस्त) हेतु दिया है तो बैंक को देय धनराशि–

$$\text{मूलधन} = \frac{\text{कुल समूह को प्राप्त ऋण राशि}}{\text{कुल किस्त}}$$

2,75,000 / 60 = 4583.33

कुल मूलधन राशि 4583.33 को हम 4600 मान लेते हैं ऐसा सदस्यों को आसानी से याद रहे इसलिये करते हैं।

$$\text{ब्याज} = \frac{\text{बैंक द्वारा देय कुल ऋणराशि X ब्याज दर}}{100}$$

= 24750 (वार्षिक)

चूंकि किस्त मासिक वापस करनी है एवं मूलधन भी मासिक निकाला गया है इसलिये ब्याज को भी मासिक निकाल लेते हैं। मासिक ब्याज ज्ञात करने के लिये वार्षिक ब्याज 24750 को 12 से भाग दे देते हैं।

मासिक ब्याज = 24750 / 12 = 2062.5

(उसको 2100 रूपये मान लेते हैं)

ब्याज एवं मूलधन निकालने के बाद दोनों जोड़ देते हैं जिससे बैंक की देय धनराशि निकाल लेते हैं।

बैंक को देय धनराशि (मूलधन) = 4600.00

ब्याज = 2100.00

योग– 6700.00

बैंक को देय किस्त ज्ञात करने के बाद समूह के पास बची शेष राशि निकाल लेते हैं क्योंकि समूह को सदस्यों द्वारा प्राप्त राशि समूह द्वारा देय बैंक की किस्त से अधिक है।

समूह के पास बची (बचत)शेष राशि (बैंक किस्त देने के बाद)

= 16000 – 6700 = 9300

समूह के पास बैंक किस्त देने बाद 9300 शेष है जिसका उपयोग समूह द्वितीय वरीयता के सदस्यों को देने के लिये करता है। चूंकि 8वीं वरीयता के सदस्य को 50000 की जरूरत है और समूह के पास केवल 9300 रू0 है। सदस्य को पचास हजार देने के लिये हमें कुछ महीनों तक इंतजार करना होगा।

चरण–6

द्वितीय–प्राथमिकता में ऋण प्राप्त करने वाले सदस्यों का विवरण

जिस प्रकार बैंक सभी सदस्यों के एक साथ पैसा नहीं दे सकती है। समूह के सदस्य ही यह तय करते हैं कि किन सदस्यों को उनकी आवश्यकता अनुसार पहले पैसे दिये जाये। चक्रीय प्रणाली बनाकर यह तय किया जाता है कि बैंक की किस्त देने के बाद समूह के पास जो पैसा (कारपस) बचता है उसे समूह जब तक सी.सी.एल. खाते में रखता है जब तक वह धनराशि अगले सदस्य के जरूरत के बराबर न हो जाये।

उदाहरण के लिए–
मान लेते हैं कि समूह को बैंक से फरवरी–08 में ऋण मिल जाता है तो सदस्यों द्वारा अगले माह यानि कि मार्च 08 से किस्त की वापसी शुरू हो जाती है।

किस्त	**धनराशि**
मार्च–08	9300.00
अप्रैल–08	9000.00
मई–08	8800.00
जून–08	8500.00
जुलाई–08	8400.00
अगस्त–08	8200.00
	योग–**52200.00**

आठवीं वरीयता के सदस्य को लगभग छः महीने बाद (बैंक से ऋण मिलने) जुलाई–08 में 50,000 देने के बाद समूह के पास बची शेष राशि–

52200 – 50000 = 2200.00

अगस्त–08 में ऋण मिलने के बाद सितम्बर–08 से 8वीं वरीयता के सदस्य से भी किस्त रू0 3100.00 मिलने लगती है। 9वीं वरीयता के सदस्य की 30,000 की जरूरत है।

समूह के पास शेष राशि = 2200

किस्त

सितम्बर–08 = 8000.00 + 3100.00 = 11,100.00 सदस्य द्वारा वापस किस्त

अक्टूबर–08 = 10,800.00

नवम्बर–08 = 10,500.00

योग– 34,600.00

नवम्बर–08 माह में समूह के पास 34600.00 रू0 है । नवम्बर–08 9वीं वरीयता के सदस्य को 30,000.00 का ऋण दे सकता है।

9वीं वरीयता के सदस्य को 30,000 ऋण देने के बाद समूह के पास बची शेष राशि–

34,600–30,000 = 4600.00

नवम्बर–08 में 9वीं वरीयता के सदस्य को ऋण मिलने के बाद वह अगले महीने यानि दिसम्बर–08 से किस्त 1250 की वापसी शुरू कर देगी।

10वीं वरीयता के सदस्य को 20,000 रू0 की जरूरत है।

समूह के पास शेष राशि = 4600.00

किस्त

दिसम्बर–08 = 10,300 + 1850 (9वीं वरीयता)

= 12350.00

जनवरी–08 = 12000.00

योग – 28950.00

जनवरी–09 में समूह के पास 28950.00 रू0 है। अतः समूह 10वीं वरीयता के सदस्य को 20,000 दे सकता है। 10वीं वरीयता के सदस्य को 20,000 ऋण देने के बाद समूह के पास बची शेषराशि–

28950–20,000 = 8950.00

11वीं वरीयता के सदस्य को भी 20,000.00 रू0 की जरूरत है।

समूह के पास शेष राशि = 8950.00

<u>किस्त</u>–

फरवरी–09 = 11700.00 + 1200.00 10वीं वरीयता किस्त

= 12900.00

योग– 21850.00

चूंकि 11वीं वरीयता के सदस्य को रू0 20,000 चाहिए जबकि समूह के पास रू0 21,850.00 हैं। अब समूह 11वीं वरीयता के सदस्य को 20,000.00 रू0 का ऋण दे सकते हैं। 20,000.00 ऋण देने के बाद समूह के पास बची शेष राशि

21,000.00 – 20,000.00 = 1850.00

फरवरी–09 में ऋण मिलने के बाद 11वीं वरीयता के सदस्य द्वारा किस्त रू0 1200.00 की वापसी मार्च–09 से शुरू हो जायेगी।

अन्त में 12वीं वरीयता के सदस्य को रू0 40,000.00 की जरूरत है।

समूह के पास बची शेष राशि रू0 1850.00

<u>किस्त–</u>

मार्च–09 = 12,500.00 + 12,00.00 (11वीं वरीयता के सदस्य की किस्त)

= 13700.00

अप्रैल–09 = 13400.00

मई–09 = 13000.00

योग = 41950.00.00

मई–09 में समूह के पास कुल राशि 41950.00 है। अब समूह 12वीं वरीयता के सदस्य को 40,000.00 का ऋण दे सकता हैं

इस प्रकार हम देखते हैं कि समूह के हर सदस्य को मई–09 तक ऋण मिल जाता है।

ध्यान देने योग्य बातें– चक्रीय प्रणाली के अन्तर्गत हम देखते हैं कि माह दर माह किस्त की राशि घटती जाती है। ऐसा ब्याज कम होने के कारण होता है। यह सभी सदस्यों द्वारा समूह में देय किस्त एवं समूह द्वारा बैंकी को देय किस्त दोनों में होती है। उसको हम एक उदाहरण के माध्यम से समझा सकते हैं।

उदाहरण– माना कि किसी सदस्य ने समूह से रू0 12000.00 24 महीने के लिये 2% की दर से ऋण लिया है।

समूह की प्रथम माह में देय किस्त–

मूलधन = 12000 / 24 = 500

ब्याज $= \frac{12000 \times 2}{100}$

= 240.00

किस्त = 500 + 240 = 740.00

समूह को दूसरे माह में देय किस्त–

मूलधन = 500

ब्याज $= \frac{11500.00 \times 2}{100}$

= 230.00

किस्त = 500 + 230 = 730.00

हम देख रहे हैं कि प्रथम माह में देय किस्त 740.00 है जबकि दूसरे माह में यह राशि घटकर 730.00 हो गयी है। ऐसा इसलिये हो रहा है क्योंकि सदस्य ने पहले महीने में 500.00 रू0 मूलधन वापस कर दिया है और अगले महीने केवल 11500.00 रू0 का ऋण ही शेष रहता है। जैसा कि हम जानते हैं कि समूह केवल उसी पैसे पर ब्याज लेता है जो सदस्य के पास शेष रहता है। यही कारण है कि दूसरे माह में केवल 11500 रू0 पर ही ब्याज लगती है क्योंकि सदस्य ने 500 रू0 प्रथम माह में वापस कर दिया है।

उसी तरह बैंक को देय किस्त भी कम होती जाती है।

चरण–6

द्वितीय–प्राथमिकता में ऋण प्राप्त करने वाले सदस्यों का विवरण

क्रमांक	सदस्य का नाम	कुल वित्तीय जरूरतों को पूर्ण करने के लिए ऋण की आवश्यकता						सदस्य का योगदान (रू0)	समूह के माध्यम से बैंक धनराशि की आवश्यकता	सदस्य से समूह को ऋण की देय धनराशि(रू0)			समूह से बैंक को ऋण की देय धनराशि			टिप्पणी / माह जिसमें सदस्य को ऋण प्राप्त होगा
		आय संवर्धन गतिविधि		सामाजिक आवश्यकताएं		पुराने कर्ज की चुकौती	कुल धनराशि की आवश्यकताए			किश्तों की राशि(24 किश्तों में)			किश्तों की कुल संख्या(25 से 60 तक)			
		गतिविधि	राशि (रू0)	गतिविधि	राशि (रू0)	राशि (रू0)				मूलधन (रू0)	ब्याज (रू0)	कुल (रू0)	मूलधन (रू0)	ब्याज (रू0)	कुल (रू0)	
8	उमा सिंह	भैंस पालन	20000	मकान मरम्मत	30000	50000			50000	2100	1000	3100				अगस्त 08
9	सरस्वती	किराना व्यापार	35000			35000		5000	30000	1250	600	1850				नवम्बर 08
	निर्मला	विवाह		शादी	20000	20000			20000	800	400	1200				जनवरी 09
	लक्ष्मी देवी	भैंस पालन	20000			20000			20000	800	400	1200				फरवरी 09
	सुमन सोनी	आभूषण व्यवसाय	50000			50000		10000	400000	1700	800	2500				मई 09
योग			125000		50000	175000		15000	520000	6650	3200	9850				

चरण–7

करारनामा

इस चरण में सदस्य एवं समूहों के बीच, समूह एवं बैंक के बीच, समूह एवं ग्राम संगठन के बीच करारनामा होता है। इस करारनामा में सभी सदस्यों के नाम एवं हस्ताक्षर होते है। इसको नीचे उदाहरण के रूप में बताया गया है।

1– सदस्य एवं समूह के बीच

2– समूह एवं बैंक के बीच

3– समूह एवं ग्राम संगठन के बीच

हम सभी वैभव लक्ष्मी स्वयं सहायता समूह की बहनें यह करार करती हैं कि, हम सभी बहनें जो सूक्ष्म ऋण योजना के अन्तर्गत बैंक से ऋण ले रही हैं उन रूपयों का उपयोग दर्शाये गये काम के लिए ही करेगी । किस्तों की वापसी सही समय पर करेगी।

समूह सदस्यों के नाम	**हस्ताक्षर**